साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति
साहित्योत्सव का पाँचवॉ दिन
बाल गतिविधियों और आदिवासी लेखन पर केन्द्रित रहा
बच्चे अच्छा साहित्य अवश्य पढ़ें – रश्मि नर्जरी

नई दिल्ली, 25 फ़रवरी 2017 । साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव का पाँचवॉ दिन विभिन्न बाल गतिविधियों और आदिवासी लेखन को समर्पित रहा। बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' का उद्घाटन प्रख्यात बाल साहित्यकार रश्मि नर्जरी ने किया। उन्होंने बच्चों के अंदर अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत डालने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि वीडियो गेम्स, कंप्यूटर और मोबाइल के बदले पुस्तकें पढ़ना व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत कृति से एक कहानी बच्चों को सुनाई और उनके सवालों के उत्तर भी दिए। एक बच्चे के सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि अच्छे लेखक होने के साथ–साथ अच्छा व्यक्ति होना भी जरूरी है। इसके बाद प्रो. बी. कामेश ने अपनी मैजिक शो द्वारा बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया। उन्होंने बच्चों को बहुत–से जादुई करतब सिखाए भी। इसके बाद बच्चों के लिए संसप्तक नाट्यदल द्वारा कई कहानियों के नाट्य–पाठ प्रस्तुत किए। कहानी और कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें सीनियर वर्ग में प्रथम पुरस्कार न्यू ग्रीन पब्लिक स्कूल की छात्रा अस्मिता बाबूराज को तथा जूनियर वर्ग में ये पुरस्कार एस.के.वी. दयानंद स्कूल की छात्रा शमिया को दिया गया।

'आदिवासी लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत 'सृजन की आदिवासी कहानियाँ' विषय पर आदिवासी सृजन कथाओं का पाठ हुआ। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा आदिवासी भाषाओं के साहित्य पर की जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया तथा सपूर्ण देश के आदिवासी लेखकों से इसके लिए सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि यह पहली बार है, जब आदिवासी सृजन कथा साहित्य अकादेमी के धरोहर में शामिल होंगी। उन्होंने बताया कि सृजन कहानियाँ मानव को प्रकृति

से जोड़ती हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं आदिवासी पत्रिका 'अखरा' के संपादक श्री अश्विनी कुमार पंकज ने कहा कि भारत की आज़ादी के 70 वर्ष बाद असुर भाषा का व्याकरण लिखा जा रहा है और इसे झारखंड के सेमुअल बिरजिया लिख रहे हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पूरे देश के आदिवासी की सृजन कथा एक ही है, लेकिन ये सृजन कथा आदिवासी की पुरखा कथा है, जो वैज्ञानिकता पर आधारित है। आदिवासी समुदाय सिन्धु सभ्यता के नष्ट होने की कथा बता सकता है, यह धरती की कथा के प्रारंभिक साक्ष्य हैं और जिंदा हैं। आदिवासी लोकगीत सृजन की व्यापक व्याख्या करता है। इसमें झारखंड के छह आदिवासी भाषाओं के लेखकों ने अपनी भाषाओं में सृजन कहानियाँ सुनाईं। इस क्रम में सबसे पहले श्री रेमिस कंडुलाना ने मुंडा समुदाय की उत्पत्ति और सृजन की कहानी लोग गीत के माध्यम से प्रस्तुत की। श्रीमती ग्लोरिया सोरेंग ने कहा कि हमारी कथा पुरखा कथा है, हमारी सृजन कथा प्रकृति से सीधा संवाद की कथा है। श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा की सृजन कथा सुनाई। श्री सरन ओराँव ने मानव के बनने की कथा को कुडुख गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा धरती को बनाने में केचुआँ का सबसे ज्यादा योगदान रहा। 'हो' भाषा के लेखक 'डोबरो' बिरुली ने हो समुदाय के मिथ पर प्रकाश डाला। श्री सुंदर मनोज हेम्ब्रम ने संताली सृजन मिथ को संताली एवं हिंदी में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा संताल आज तक अपनी परंपरा को सुरक्षित रखा है तथा आदिवासी स्वयं ही अपनी सभ्यता, संस्कृति और भाषा का संरक्षण कर सकते हैं।

लेखक सम्मिलन का दूसरा सत्र कविता पाठ को समर्पित था, जिसमें अठारह भाषाओं के आदिवासी कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ मूल भाषा के साथ–साथ हिंदी एवं अंग्रेजी अनुवाद में प्रस्तुत किया। कविता पाठ करनेवाले कवियों में प्राचीनतम आदिवासी असुर समुदाय के कवि श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा में हिंदी अनुवाद के साथ कविताएँ सुनाईं, वहीं श्रीमती वासमल्ली ने टोडा भाषा का गीत और अंग्रेजी अनुवाद के साथ कविता सुनाई। ध्यातव्य है कि यह भाषा बोलनेवाले मात्र 2000 लोग ही हैं। अन्य कवियों में सर्वश्री असीम राय (चकमा), जान मोहम्मद हकीम (गोजरी), जामिनीकांत तिरिया एवं साधुचरण देवगम (हो), वांसलन ई. धर (खासी), नीरदचंद्र कन्हार (कुई), थुप्सटन नॉर्बो (लद्दाखी), विद्येश्वर डोले (मिसिंग), जोएचिम टोप्नो (मुंडारी), संतोष पिचा पावरा (पावरी), गैगरिन सबर (सौरा) तथा श्रीमती फैमलिन के. मराक (गारो), वंदना टेटे (खरिया), फ्रांसिस्का कुजुर एवं शांति खाल्खो (कुडुख) ने उनके नामों के सामने अंकित भाषाओं में अपनी रचनाएँ सुनाईं। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्रीमती रमणिका गुप्ता ने कहा कि अकादेमी के ये आयोजन आदिवासी साहित्य का इतिहास गढ़ रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि आदिवासी भाषाओं को बचाया जाना जरूरी है, चाहे उन्हें किसी भी लिपि में लिखा जाए।

लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरा सत्र प्रो. जेंसी जेम्स की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोक साहित्य एवं धार्मिक प्रथाएँ' पर केंद्रित था, जिसमें सर्वश्री मनजीत महंत, टी. धर्मराज और बलवंत जानी ने क्रमशः 'पारंपरिक ओराँव समाज में लोक विश्वासएवं धार्मिक प्रथाओं के कुछ आयाम', 'तमिऴ समाज में साहित्य की वाचिकता' एवं 'लोकज्ञान और धार्मिक लोक गतिविधियाँ' शीर्षक अपने आलेख पढ़े। प्रो. जेम्स ने कहा कि लोकसाहित्य का कथन एवं पुनर्कथन दोनों ही चुनौतीपूर्ण हैं तथा महाकाव्यों के संदर्भ में कालजयी पाठ का पूरक विमर्श भी।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल ने की, जो 'लोक साहित्य एवं कहानी सुनाने की कला' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्रीमती तानाश्री रेड्डी, डॉ. पी. राजा एवं श्रीमती फातिमा सिद्दीकी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. लाल ने अभिलेखित लोकसाहित्य और जीवंत लोकसाहित्य के अंतर को स्पष्ट किया और चंबा आदिवासी समाज से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वाचिक परंपराएँ प्रायः पुरानी पीढ़ी द्वारा ही याद की जाती हैं। अन्य विद्वानों ने विभिन्न संदर्भों और उदाहरणों के माध्यम से भारतीय भाषाओं में कहानी कहने की कला के आरंभ, विकास और वर्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए।

'इक्कीसवीं शताब्दी में लोक साहित्य की प्रासंगिकता' पर केंद्रित पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की, जिसमें सर्वश्री अरविंद पटनायक, डॉ. राघवन पय्यनाड एवं एच. सी. बोरलिंगय्या ने अपने आलेखों का पाठ किया। प्रो. सिंह ने कहा कि लोकसाहित्य मानवीय ज्ञान का अजस्र स्रोत है। इक्कीसवीं सदी में उच्च तकनीक की उपलब्धता और आवागमन के तीव्र साधनों के कारण संपूर्ण दुनिया के लोकसाहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के अवसर सामने है। अन्य वक्ताओं ने अपने आलेखों के माध्यम से यह बात उजागर की कि लोकसाहित्य अपने गहरे सरोकारों के कारण आज भी प्रासंगिक है।

छठा सत्र 'प्रदर्शनकारी लोकसाहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। इस सत्र में श्री एच. ननी कुमार ने मणिपुर की प्रदर्शनकारी लोककलाओं पर केंद्रित अपना आलेख पढ़ा, जबकि श्री जेठो लालवाणी ने सिंधी भगत के प्रदर्शन पर अपने विचार रखे।

कल साहित्योत्सव के अंतिम दिन (26 फ़रवरी) 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषय पर परिसंवाद तथा अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई है।